नक्सलवाद की समस्या का गाँधीवादी समाधान

डॉ0 चन्द्रलोक भारती
एसो0 प्रोफे0, राजनीति विज्ञान विभाग,
मुराका कालिज, सुल्तानपुर
टी0एम0बी0यू0 भागलपुर, बिहार
ई–मेल– clbharti21@gmail.com

सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के 72 वर्ष के पश्चात् भारत के लोकतांत्रिक मूल्य की सबसे ज्वलंत समस्याओं मे नक्सलवाद की समस्या है, जिसका वर्तमान समय में एकमात्र समाधान का रास्ता वो है– गाँधीवादी समाधान, क्योंकि किसी भी समस्या का समाधान उस समस्या के गर्भ में छुपी हुई होती है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी आधी आबादी बेरोजगारी, भुखमरी, गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है, उसके पीछे एक मात्र कारण नहीं, बल्कि देश व्यापी अनेकों कारण हैं, उस परिवेश के लिए आज जिस वर्ग पर सबसे पहले ऊँगुली उठती है, वह राजनीतिक वर्ग है–जिनके कन्धों पर लोकतांत्रिक मुल्य अवलंबित है। अवसरवादी सत्ता परस्त नेता, भ्रष्ट नौकरशाह एवं सामंती मनोवृति वाले वर्ग लोकतंत्र को खोखला कर रही है। पिछले 70 वर्षों में सत्तधारी नेता– धर्म के नाम पर, जाति, सम्प्रदाय के नाम पर, भाषा और क्षेत्र के नाम पर, उच्च एवं पिछड़ा वर्ग के नाम पर दलितों के नाम पर, मंदिर–मस्जिद के नाम पर सत्ता की रोटी सेंक रही है। अगर समय रहते इस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो इस राष्ट्र में नक्सलवाद क्या और भी कई बाद जन्म लेगा जैसे– जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, धर्मवाद, उन्मादवाद और अराजकतावाद की जड़े मजबूत होगी जिसका परिणाम सम्पूर्ण भारतवासियों को भोगना होगा। लेकिन आश्चर्य की बात है कि जिस देश की धरती पर महात्मा बुद्ध, महावीर, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, डॉ0 भीमराव अम्बेदकर एवं अहिंसा के पूजारी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जैसे महापुरूष भारत क्या पूरे विश्व को शांति का सन्देश, सर्वोदय का सिद्धांत, समतामुलक समाज की स्थापना का संदेश दिया, उसी धरती पर नक्सलवाद की समस्या कैंसर की तरह फैल रहा है। जहाँ गाँधीजी सत्याग्रह, सत्य एवं अहिंसा के हथियार को लकर विदेषी साम्राज्यवादियों को अपनी धरती से बाहर निकाला और दासता की जंजीरें तोड़ डालीं थी उसी धरती पर हिंसा से कांति ने सिर उठाया और भारत की जनता एवं सरकार दोनों को आश्चर्यचकित कर दिया, उसका नाम नक्सलवाद है।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 31.12.2018
Approved: 28.02.2019

डॉ0 चन्द्रलोक भारती

नक्सलवाद की समस्या का गाँधीवादी समाधान

RJPP 2019,
Vol. XVII, No. 1,
pp. 58-64
Article No. 8

Online available at *:*
https://anubooks.com/?page_id=5286

प्रस्तावना

नक्सलवाद क्या है? भारत में सर्वप्रथम नक्सलवाद की उत्पत्ति कहाँ से हुई ? आज उसकी वर्तमान स्थिति क्या है ? इन सब यक्ष प्रश्नों पर दृष्टिपात करने के पहले, एक क्षण यह भी सोंचें कि क्या नक्सलवाद को ठीक उसी श्रेणी का आतंकवाद कहा जा सकता है जैसा कि पंजाब, जम्मू एवं कश्मीर एवं सम्पूर्ण भारत में फैला है। सत्य तो यह है कि नक्सलवाद को उस श्रेणी का आतंकवाद नहीं कहा जा सकता जिसमें अलगावादियों द्वारा उठाई गयी मांगें या हिंसा आती है, क्योंकि नक्सलवाद अपने लिये कोई क्षेत्र, राज्य, भाषा नहीं चाहते हैं, बल्कि उनका संघर्ष एक वर्ग विहीन समाज, समतामूलक समाज जिसमें सभी वर्ग को समान अधिकार एवं संरक्षण मिले। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नक्सलवादी शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीका न अपनाकर हिंसा शक्ति एवं शस्त्रों का सहारा ले रहे है। सही रास्ते से भटक चूके है। इससे कानून व्यवस्था, आन्तरिक सुरक्षा एवं भारत के संसदीय लोकतंत्र के लिए चुनौति बनी हुई है–जिसका एक मात्र समाधान – गाँधीवादी समाधान है।

शोधप्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णणात्मक प्रकृति का है। शोध कार्य के लिए विभिन्न स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। उसके लिए मुख्यतः प्रकाशित ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाओं मे छपे विवरण, निबंध एवं लेख, आलेख इन्टरनेट, गुगल, तथा विभिन्न शोध ग्रन्थों, को अध्ययन का आधार बनाया है।

तथ्य विश्लेषण

15 अगस्त 1947 को आजादी मिलने के साथ हीं अंग्रेजों के पिट्टू जमींदार सामंतीवादी व्यवस्था के चलते अत्याचार एवं जुल्म की पराकाष्ठा चरमोत्कर्ष पर पहूँच चुकी थी। इसी सामंतीवादी व्यवस्था ने नक्सलवाद को जन्म दिया ।

नक्सलवाद की उत्पत्ति पश्चिम बंगाल के नक्सलवाड़ी गाँव से हुई थी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता चारू माजूमदार और कानू सान्याल ने 1969 में सत्ता के खिलाफ एक सशस्त्र आंदोलन किया। माजूमदार चीन के कम्युनिस्ट नेता माओत्से तुंग के बड़े प्रशंसक थे। इसी कारण नक्सलवाद को माओवाद भी कहा जाता है। 1968 कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ मार्क्ससिज्म एंड लेनिनिज्म (CPML) का गठन किया गया, जिनके मुखिया दीपेन्द्र भट्टाचार्य थे। यह लोग मार्क्स और लेनिन के सिद्धांत पर काम करने लगे, क्योंकि वे उन्ही से हीं प्रभावित थे। वर्ष 1969 में पहली बार चारू माजूमदार और कानू सान्याल ने भूमि अधिग्रहण को लेकर पूरे देश में सत्ता के खिलाफ एक व्यापक लड़ाई शुरू कर दी। भूमि अधिग्रहण को लेकर देश में सबसे पहले आवाज नक्सलवाड़ी गाँव से हीं उठी थी। आंदोलनकारी नेताओं का मानना था कि **''जमीन उसी की, जो उस पर खेती करें''** जमींदारी प्रथा ने पश्चिम बंगाल के नक्सवाड़ी क्षेत्रों में माँ, बहन, बेटियों, मजदूरों, किसानों पर बूरी नजर एवं लगान के नाम पर लोगों की जमीन हड़प लेना, जुल्म ढ़ाहना इत्यदि प्रताड़ना ने आज नक्सवाद को जन्म दिया । व्यक्ति सहन शक्ति होने तक हीं सहन कर पाता है, असहनीय होने पर विद्रोह कर बैठता है। उस समय स्थानीय पुलिस ने भी धनीमानी

सम्पन्न जमींदारों का ही साथ दिया परिणाम स्वरूप नक्सली धीरे–धीरे संगठित होकर जमींदारों एवं पुलिस के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया। नक्सलवाड़ी से शुरू हुआ इस आंदोलन का प्रभाव पहली बार तब देखा गया जब पश्चिम बंगाल से काँग्रेस को सत्ता से बाहर होना पड़ा था इस आंदोलन का ही प्रभाव था कि 1977 में पहली बार पश्चिम बंगाल में कम्युनिस्ट पार्टी सरकार के रूप में आयी और ज्योति बसु मुख्यमंत्री बने।

सामाजिक जागृति के लिए शुरू हुए इस आंदोलन पर कुछ सालों के बाद राजनीति का वर्चस्व बढ़ने लगा और आंदोलन जल्द हीं अपने मुद्धों और रास्तों से भटक गया जब यह आंदोलन फौलता हुआ बिहार पहूँचा तब यह अपने मुद्धों से पूरी तरह भटक चुका था। अब यह लड़ाई जमीन की लड़ाई न रहकर जातीय वर्ग की लड़ाई शुरू हो चुकी थी। यहाँ से शुरू होता है उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग के बीच उग्र संघर्ष । जिससे नक्सल आंदोलन ने देश मे नया रूप धारण किया। **श्रीराम सेना** जो माओवदियो की सबसे बड़ी सेना थी, उसने उच्च वर्ग के खिलाफ सबसे हिंसक प्रदर्षन करना शुरू किया। इससे पहले 1972 ई0 में आंदोलन के हिंसक होने के काण चारू मजूमदार को गिरफ्तार कर लिया गया और 10 दिनों के लिए कारावास की सजा हुई । सजा के दौरान हीं उनकी जेल में हीं मौत हो गयी नक्सलवादी आन्दोलन के प्रणेता कानू सान्याल ने आन्दोलन के राजनीतिक का शिकार होने के कारण और मुद्धों के भटकने के कारण तंग आकर 23 मार्च 2010 को आत्महत्या कर ली।

इतिहास साक्षी है कि परिवर्तन व बदलाव के लिए युद्ध का हीं सहारा लिया जाता था और अनाचार को कुचला जाता था। उस समय संचार साधन का आभाव, यातायात के साधन का आभाव, शिक्षा, साहित्य, ध्वनि विस्तारक यंत्र , मल्टीमीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया आदि की सुविधा नगन्य थी। समय परिवर्तन के साथ–साथ शक्ति, सत्ता–जनता के हाथ में चली गई है। आज जनमानस का प्रवाह जिस दिशा में बहती है, उसी तरह की परिस्थितियाँ बन जाती है। इस नक्सली जन प्रवाह को शस्त्र, बल से नहीं बल्कि शास्त्र सम्मत, प्रबल व शक्तिशाली विचारों से हीं रोका जा सकता है, आज के इस इन्टरनेट युग तो वैचारिक युद्ध का युग है। किसी भी महापुरूष का विचार, प्रबल और शक्तिशाली होंगे वे हीं अपने अनुकुल वातावरण उत्पन्न कर लेते है। उदाहरण के लिए–

1. महात्मा गाँधी ने वैचारिक युद्ध एवं अहिंसावादी सिंद्धात, सत्याग्रह के बल पर अंग्रेजों से लड़ा और विजयी रहे।

2. स्वामी विवेकानंद अपने प्रबल व शक्तिशाली विचारों के बल पर ही देश – विदेशों में लोगों का दिल जीता ।

3. बाबा रामदेव व अन्ना हजारे जैसे व्यक्तित्व के प्रबल व शक्तिशाली विचारों के कारण लगातार लोगो का दिल जीत रहे हैं।

4. समाजवादी चिंतक कार्ल मार्क्स एवं रूसो जैसे विचारक अपने प्रबल एवं शक्तिशाली व क्रान्तिकारी विचारों के बल पर बिना किसी से युद्ध के पूरी दुनियां में लोकतंत्र स्थापित करने में सफल रहे ।

5. चाय बेचने वाले भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने प्रबल व शक्तिशाली विचारों के कुषल नेतृत्व से ही राष्ट्र का नेतृत्व कर रहें हैं।

6. समाजवादी नेता जय प्रकाश नारायण अपने प्रबल व शक्तिशाली विचारों, से हीं सत्ता परिवर्तन करने मे सफल हुए और कांग्रेस को सत्ता से बाहर किये थे।

7. पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी अपने कुशल नेतृत्व, शक्तिशाली विचारों सिद्धान्तों उच्च अंतराष्ट्रीय और कुटनीति से ही लोकप्रिय नेताओं की श्रेणी में स्थान लिये हुए थें।

जब हम गाँधीजी के नेतृत्व एवं उनके विचारों, सिद्धान्तों से अंग्रेजो को शान्ति पूर्ण तरीकों से बाहर निकाल सकते हैं। तो नक्सली तो हमारे अपने हीं राश्ट्र के भाई है। उन्हें हम शांतिपूर्ण तरीकों से क्यो नही मना पाएँगे। सामुहिक प्रार्थना निवेदन में बड़ी शक्ति होती है। हमारे देश में 6 लाख 38 हजार 365 गाँव हैं। इन सभी गाँवों में एक–एक कार्यकर्ता, संगठन बनाकर नक्सली क्षेत्रों में शांति मार्च निकालकर, नक्सलियों से हथियार छोड़कर देश की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए प्रार्थना करें तो यह प्रार्थना अवष्य स्वीकार होगी। उदाहरण के लिए पंजाब मे पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी.सिंह के शांति मार्च के बाद आतंकवाद समाप्त करने में सफल हुए थे।

नक्सली समस्या केवल बस्तर, छत्तीसगढ़, झारखण्ड की हीं समस्या नहीं है, बल्कि यह देश के 450 से भी अधिक जिले की समस्या है अब यह राष्ट्रीय समस्या बन चुकी हैं । देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि इस समस्या के समाधान में अपना सहयोग दें। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सभी सरकारी एवं गैर सरकारी अधिकारी व कर्मचारियों की सेवाऍ ली जानी चाहिए । सच पूछा जाय तो विचार शक्ति विश्व की सबसे बड़ी शक्ति है वस्तुस्थिति को समझते हुए इन दिनों करने योगय एक हीं काम है– जनमानस का परिशोधन । इसी को विचार क्रान्ति का नाम दिया गया है।

8. होली के समय पूरा देश होली के रंग में रंग जाता है। दिवाली के समय सभी तरफ दिवाली अर्थात् असत्य पर सत्य का विजय, अन्धकार पर प्रकाश का विजय की चर्चा रहती है। चुनाव के समय पूरा देश चुनावी रंग में रंग जाता है। सावन में सुल्तानगंज से लेकर देवघर (बाबानगरी जहाँ देखो वहाँ बोलबम के नारों से पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो जाता है। क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि नक्सलवादी समस्या के समाधान के लिए पूरा देश कृत संकल्प लेकर रंग जाए।

9. नक्सलवादी क्षेत्र की गांवो की दिवारों पर नारे, सद्वाक्य, स्टीकर्स, प्रबल विचार समर्पण करने वाले नक्सलियों को सरकार द्वारा दी जा रहीं सहायता राहत पैकेज व सुरक्षा की जानकारी लिखी जानी चाहिए। प्रचार, प्रसार में अर्न्तदेशीय, पोस्ट– कार्ड, लिफाफा, ध्वनि विस्तारक यंत्रों, आम लोगों के अलावा स्कूली बच्चों, मल्टीमिडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया, बेनर , पोस्टर, इत्यादि का सहारा लिया जाना चाहिए।

10. नक्सलियों की समस्या के समाधन का और एक तरीका यह है कि सबसे पहले निचले स्तर के नक्सलियों के सहयोगी जो गाँव में रहते हैं उन्हे पकड़िये, ये अपने से ऊपर के नक्सलियों के नाम बताएँगें। सच तो यह है कि कोई भी सरकार नक्सली समस्या के समाधान के लिए ईमानदारी

पूर्वक प्रयास नहीं करतीं। उदाहरण के लिए – जब अजीत जोगी सरकार में थे तो उन पर आरोप लगते रहे हैं कि सरकार नक्सलियों से मिली हुई है। दूसरे उदाहरण के रूप में जब रमन सिंह सरकार में थे तो उन पर आरोप लगते रहे कि विदेशों से मिलने वाली राशि व काले धन को नक्सलियों तक पहुँचाने का काम कुछ NGO कर रहे हैं। जिसमें कुछ राजनीतिज्ञों के शामिल होने की भी चर्चा है। इसलिए ये लोग नेतृत्व को गुमराह करके रखते हैं। सत्य तो यह है कि जब तक हम नक्सलियों से मिलकर रहेंगे तब तक हमारा हित सधता रहेगा और हमारी सरकार बनती रहेगी। यदि सरकार सचमुच नक्सली समस्या का समाधान चाहती है तो अपनी पार्टी के स्थानीय नेताओं की मिली भगत को नकारना होगा और राष्ट्रीय हित की भावना को ऊपर आगे ले आना होगा । स्वयं अन्याय को समाप्त नहीं किया सकता जब तक हम किसी को जीवन नहीं दे सकते तो किसी का जीवन छीनने का कोई हक नहीं बनता।

जन शक्ति तीसरी महाशक्ति है, इसी शक्ति के सहारे नेता लोग राज कर रहे हैं, और हमारे नक्स्ली भाई उस तीसरी महाशक्ति से दूर होते जा रहे हैं। नक्सली समस्या को अब सरकार भी इस बात को स्वीकार करने लगें हैं कि नक्सलियों के साथ कहीं न कहीं अन्याय हुआ है। तभी तो कोई सरकार बड़ी से बड़ी कदम नहीं उठाना चाहती और बातचीत के जरिए समस्याओं को सुलझाने का प्रयास कर रही है। शांति का रास्ता उन्नति व प्रगति का रास्ता है। युद्ध एवं लड़ाई एवं झगड़े का रास्ता विनाश को आमंत्रित करता है। युद्ध से केवल हराने वाले को हीं नुकसान नहीं होता बल्कि जीतने वाले को भी बहुत कुछ खोना पड़ता है।

भारत मे नक्सलवाद की कुछ बड़ी घटनाएँ

1. 2007 छत्तीसगढ़ के बस्तर में 300 से ज्यादा विद्रोहियों ने 55 पुलिस कर्मियों को मौत के घाट उतार दिया था।
2. 2008 में उड़ीसा के नयागढ़ में नक्सलियों ने 14 पुलिसकर्मियों और एक नागरिक की हत्या कर दी थी।
3. 2009 में महाराष्ट्र के गढ़ चिरोली में हुए बड़े नक्सली हमले में 15 सी0 आ0 पी0 एफ0 जवानों को मौत के घाट उतार दिये थे।
4. 2010 पश्चिम बंगाल के सिल्दा कैंप में घुसकर नक्सलियों ने 24 अर्धसैनिक वालों को मार गिराया।
5. 2010 मे नक्सलियों ने कोलकता मुंबई ट्रेन में 150 यात्रियों की हत्या कर दी थी।
6. 2011 में छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में हुए एक बड़े नक्सलवादी हमले में कुल 76 जवानों की हत्या कर दी जिसमें CRPF के जवान समेत पुलिसकर्मी भी शामिल थे।
7. 2012 में झारखण्ड के गढ़वा जिले के पास बरिगंवा जंगल में 13 पुलिसकर्मी को मार गिराया।
8. 2013 छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में नक्सलियों ने कांग्रेस के नेता समेत 27 व्यक्तियों की हत्या की थी।

नक्सलवाद की समस्या का गाँधीय समाधान के साथ कुछ सुझाव

1. जन असन्तोष के कारणों पर नियंत्रण और विकास के समान अवसरों की उपलब्धता की सुनिश्चिता के साथ–साथ कड़ी दंड प्रक्रिया नक्सली समस्या के उन्मूलन का मूल है। राजनेता सरकारी एवं आम जनता ईमानदारी से किये गये प्रयास नक्सलवाद की समस्या के स्थायी उन्मूलन का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।
2. नक्सली समस्या के उन्मूलन के प्रति दृढ़ संकल्प राजनीतिक इच्छा शक्ति का विकास– क्योंकि बिना दृढ़ सकल्प के किसी भी उपलब्धि की आशा नहीं की जा सकती।
3. आम नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा के उपायों से विकास के समान अवसरों की उपलब्धता की सुनिश्चित करना।
4. शासकीय योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन एवं उनमें पारदर्शिता की सुनिश्चिता जिससे भ्रष्टाचार पर अंकुश लग सके।
5 समुचित एवं सहयोगपूर्ण कानून व्यवस्था–जिससे स्थानीय लोग नक्सलवादियों को प्रतिकार कर सकें और उन्हें जीवनोपयोगी आवश्यक चीजे उपलब्ध न कराने कि लिए साहस जुटा सकें।
6. आजीविकापरक एवं शिक्षा की व्यवस्था जिससे सामाजिक विषमताओं पर अंकुश लग सके।
7. राष्ट्र के विकास की मुख्यधारा में नक्सलियों को लाने और उनके पूनर्वव्यवस्था के लिए रोजगारपरक विशेष पैकेज की व्यवस्था करना।
8. भारत के पड़ोसी राष्ट्र चीन और पाकिस्तान से नक्सलियों को प्राप्ता होने वाले हर प्रकार के सहयोग को रोकने के लिए दृढ़ राजनीतिक और सफल कुटनीतिक उपायों पर गम्भीरपूर्वक चिंतन और वास्तविक क्रियान्वयन करना।
9. गाँधीजी के रचनात्मक कार्य, अहिंसावादी सिद्धांत, सत्याग्रह, और मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाना।
10. समाज के कमजोर वर्ग के लोगों को सम्मान के साथ रोजगार के अवसर एवं स्त्रियों को सम्मान एवं शिक्षा की व्यवस्था, अस्पष्यता उन्मुलन, सर्वधर्म सम्भाव इत्यादि।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आज 'नक्सलवाद' की समस्या सिर्फ एक राज्य के लिए नहीं बल्कि यह सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए चुनौती बनी हुई है। इस लोकतांत्रिक व्यवस्था को सही दिशा की ओर ले जाने के लिए सरकार की इच्छाशक्ति का आभाव है। नक्सलवादी समस्या को बंदूक के नोंक पर कतई नहीं दबाया जा सकता है बल्कि गाँधीवादी तरीके से इसका समाधान निकालना होगा '**अहिंसा परमो धर्मः**' – गाँधीवादी सिद्धांत में समाज में हिंसा का कोई स्थान नहीं है, जहाँ जहाँ गाँधीजी ने अपने सिद्धांत सत्य और अहिंसा, सत्याग्रह सिद्धांत को प्रयोग किया वहाँ–वहाँ सफलता मिली, चम्पारण सत्याग्रह एवं सत्य और अहिंसा के बल पर भारत को आजादी

दिलायी, दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के सिद्धांत को लेकर काले–गोरे के संघर्ष को समाप्त किया। नक्सली भाईयों एवं बहनों अब सामंतीवादी व्यवस्था एवं जमींदारी प्रथा समाप्त हो चुकी है। इसके लिए जिला से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक कानून व्यवस्था का समान संरक्षण प्राप्त हो चुका है। नक्सली आन्दोलन सही रास्ते से भटकने लगा है। कई नक्सली भाई हिंसा का रास्ता त्यागकर मुख्यधारा मे आ चुके हैं। अब समय रहते नक्सली भाई हथियार त्यागकर मुख्यधारा मे आयें और लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करने में सहयोग दें। तभी हमारा राष्ट्र विकसित राष्ट्र बन सकेगा और गाँधीजी के सपनों का भारत साकार हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 सिंहल, एस0 सी, *भारतीय शासन एवं राजनीति,* लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाषनए आगरा, पृ. **425**.
2. कुमार अजीत, *बिहार में नक्सलवादी आंदोलन का इतिहास,* जानकी प्रकाशन, पटना, पृ. **108.**
3. खानकाही, निश्तर एवं डॉ0 अग्रवाल, गिरिराजशरण, *आतंकवाद, जिम्मेदार कौन,* मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली पृ. **93.**
4. पूर्वोक्त, पृ. **93–94.**
5. कुमार, अजीत पूर्वोक्त पृ **1**.
6. डॉ0 जैन, पुखराज एवं डॉ0 फाड़िया, बी. एल. *भारतीय शासन एवं राजनीति,* साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. **714**
7. कुमार अजीत पूर्वोक्त पृ. **1**
8. खानकाही, निश्तर एवं डॉ0 अग्रवाल, गिरिराजशरणः पूर्वोक्त पृ. **94**
9. पूर्वोक्त पृ. **94–95**
10. *हरिजन* पत्रिका
11. *मेरे सपनों का भारत* (गाँधीदर्शन)